Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6. डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में विश्व शांति

डॉ. मनोज कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक, डॉ. अम्बेडकर पीठ
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (इंदौर)
डॉ. मनीषा सक्सेना
पीठ आचार्य डॉ. अम्बेडकर पीठ
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (इंदौर)

सारांश

प्रायः डॉ. अम्बेडकर को संविधान शिल्पी, अनुसूचित जाति के अधिकारों के पैरोकार, अस्पृश्यता उन्मूलन और कमजोर वर्गों के उत्थान को समर्पित महामानव के रूप में जनसमान्य के बीच स्थापित किया गया है। जो प्रासंगिक है। लेकिन ऐसा करते हुए हमने बाबा साहब के विराट कार्यों को कहीं न कहीं सीमित कर दिया है। भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का चिंतन मौजूदा दौर में कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। शिक्षाविद, कानूनविद, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ डॉ. अम्बेडकर के अध्ययन एवं चिंतन में धर्म और अध्यात्म की गहरी सैद्धान्तिक समझ दिखाई देती है। नागरिक अधिकार से लेकर पर्यावरणीय सरोकारों तक डॉ. अम्बेडकर का समय सापेक्ष चिंतन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। विपरीत परिस्थितियों के बीच निजी जीवन से इतर राष्ट्र और समाज का चिंतन करने वाले डॉ. अम्बेडकर का पूरा जीवन असल मायने में विश्वशांति के स्वप्न को साकार करने में लगा रहा। आज दुनिया को युद्ध की नहीं बुद्ध की जरूरत है, पिछले कुछ वर्षों से बौद्धिक वर्ग इस बात को स्वीकार करने लगा है। बुद्ध मानवता के सच्चे उपदेशक हैं। न्याय, समता, अपरिग्रह के प्राकृतिक नियमों और दर्शन को प्रासंगिक बनाए रखने का प्रयास करने वाले बुद्ध ने दुनिया को तर्क आधारित ज्ञान के साथ मैत्री और करुणा का पाठ पढ़ाया। डॉ. अम्बेडकर ऐसे मानवता के उपासक को अपना गुरू मानते थे। मनुष्यता का अभ्यास ही शांति की पहली सीढ़ी है। डॉ. अम्बेडकर ने जीवन भर समाज और मानव कल्याण के पक्ष में समता-समानता और बंधुता की वकालत की। इसमें कोई संदेह नहीं कि मौजूदा रूस और यूक्रेन युद्ध से महज दो देश अथवा भौगोलिक क्षेत्रफल भर प्रभावित हुए हैं बल्कि पूरी दुनिया परोक्ष-अपरोक्ष रूप से इस युद्ध प्रभावित हुई है। जाति, धर्म, रंग-रूप और सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद मानवीय गरिमा और आपसी सौहार्द्र की संकल्पना सबके लिए समान रूप से जरूरी है। इस शोध आलेख में डॉ. अम्बेडकर के बहुआयामी चिंतन में विश्व बंधुत्व की समावेशी दृष्टि का अध्ययन शामिल है।

शब्द कुंजी- बंधुत्व, डॉ. अम्बेडकर, मानवता, भारत

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रस्तावना-

विज्ञान, तकनीकी एवं नवाचारों की वर्तमान दुनिया को एक साथ लाने के लिए विश्वग्राम की संकल्पना से कहीं आगे भारतीय चिंतन में व्याप्त वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन है। भारतीय संविधान का दर्शन भी समता-समानता एवं बंधुत्व के मूलमंत्र पर आधारित है। संविधान शिल्पी डॉ. अम्बेडकर मानवीय गरिमा और नागरिक समाज में समता आधारित व्यवस्था बनाए रखने में राज्य की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं। लोकतन्त्र और लोकतान्त्रिक व्यवस्था में विश्वास रखने वाले डॉ. अम्बेडकर ने आजीवन छुआछूत और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष करने के बावजूद उदरवादी दृष्टि अपनाई। मार्टिनलूथर किंग और डॉ. अम्बेडकर दोनों ही अपने-अपने समय परिवेश और परिस्थियों के बीच उदारवादी दृष्टि अपनाते हुए समानता के लिए संघर्ष किया। अम्बेडकर ने समाज के अस्पृश्य,उपेक्षित तथा सदियों से सामाजिक शोषण से संत्रस्त समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य ही नहीं किया बल्कि उनका पूरा जीवन समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वास पर आधारित संकीर्णताओं और विकृतियों को दूर करने पर भी केंद्रित रहा। "डॉ. आंबेडकर भारत में एक ऐसे वर्गविहीन समाज की संरचना चाहते थे जिसमें जातिवाद, वर्गवाद, संप्रदायवाद तथा ऊंच-नीच का भेद न हो और प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वाभिमान और सम्मानपूर्ण जीवन जी सके।"[i] वर्तमान वैश्विक परिस्थिति में भले ही रंग और जाति आधारित विभेद कम हुआ दिखाई देता है, लेकिन इसके बरक्स ऐसी कई आसमानताएं पनप रही हैं जिनसे पार पाने के लिए पुनः बुद्ध और अम्बेडकर के समीचीन विचारों को आत्मसात करने की जरूरत है। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक चिंतन के साथ-साथ डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में पर्यावरणीय सरोकार भी शामिल है। निकट भविष्य में जल और पर्यावरणीय संकट पर डॉ. अम्बेडकर की दूरदृष्टि ने ही नदी जोड़ो की संकल्पना प्रस्तुत की थी। मौजूदा समय में चाहे परमाणु हथियारों से लैस दुनिया के तमाम देशों की बात हो या फिर प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन या फिर संसाधनों के गैर-बराबरी पूर्ण बंटवारे की स्थिति, सभी वैश्विक अशांति की ओर इंगित करते हैं। डॉ. अम्बेडकर लोकतान्त्रिक मूल्यों को एक ऐसे दृष्टिकोण के रूप में देखते हैं जो मनुष्यता के हर एक पहलू को प्रभावित करता है। सामाजिक एवं संवैधानिक नैतिकता एक रूप में व्यवहार और सिद्धान्त में तादात्म्य स्थापित करने का माध्यम है। जिस पर डॉ. अम्बेडकर खासा ध्यान देते हैं। उनके अनुसार सामाजिक नैतिकता मनुष्यों के बीच समानता और सम्मान की मान्यता पर आधारित थी[ii] संवैधानिक नैतिकता का अर्थ संवैधानिक लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों का पालन करना[iii] है। ग्लोबल होती सभ्यताओं की बात हो या फिर विश्व समुदाय के विभिन्न समूहों के बीच बंधुत्व के आदर्श को स्थापित करने उद्देश्य, आज यह दुनिया की साझा कोशिश का हिस्सा है। लेकिन सवाल यहाँ यह है कि क्या ऐसा सामाजिक और संवैधानिक दोनों नैतिक आधारों पर चाहते हैं या इनमें से किसी एक, विचार करने की जरूरत है।

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

शांति और सौहार्द्र से विश्व शांति की प्राप्ति

हमारी धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व - एक ऐसी परंपरा से पोषित है जो शांति और सद्भाव पर आधारित है। मानवतावाद, जो बुद्ध की शिक्षाओं की पहचान रही है। सभी तरह की असमानताओं को पार कर देश की सीमा के बाहर जाकर मानवीय मूल्यों को महत्व दिया है। *अत्तदीपो भव* का सूत्रवाक्य वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना को विस्तारित करता है। लेकिन आज हम जिस मानसिक थकावट, अहंकार की वृद्धि, व्यक्तिगत और सामूहिक बल के नाजायज उपयोग की ओर बढ़ रहे हैं जो विश्व समुदाय के आदर्श को प्राप्त करना कठिन बना देता है। बुद्ध दुनिया में शांति के लिए एक बड़ी ताकत रहे हैं। बुद्ध की नीति शांति, आत्म-त्याग, दया और दान ने असंख्य लोगों के जीवन को सुगम बनाया। भारत की घोषित विदेश नीति अपने आप में पंचशील पर आधारित रही थी, बुद्ध शब्द, जो शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की संभावना की अनुमति देता है। विभिन्न विचारधाराओं के लोगों के बीच एक समंजस्य स्थापित करने का सूत्र बुद्ध द्वारा बताए चार आर्य सत्य पर आधारित है। भारत सहित दुनिया में बुद्ध की शांति, आत्म-त्याग, दया और दान की नीति न केवल सामान्य रूप से लोगों को बल्कि इसका अनुसरण करने वाले नेतृत्व को भी प्रभावित किया। इसने मध्यकालीन कई संतों के जीवन को भी प्रभावित किया। गांधी, नेहरू और अम्बेडकर जैसे आधुनिक भारत की नायकों ने कुछ वैचारिक मतक्य के बावजूद अपने जीवन और दर्शन में किसी न किसी रूप में बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाया। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर अपने जीवन के अंतिम समय में तो पूरी तरह से बुद्ध का ही अनुशरण किया। उन्होंने भारत के विकास मार्ग को बुद्ध की दृष्टि से आगे ले जाने की ओर इंगित किया।

आधुनिक भारत के सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों की बात करते हुए डॉ. अम्बेडकर का जिक्र न करना एक रूप में विषय के साथ न्याय न करने जैसा है। डॉ. बी. आर. अंबेडकर की पहचान केवल एक अर्थशास्त्री अथवा राजनीतिज्ञ के रूप में न बनने के पीछे उनका समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पण का स्वप्न था। 20वीं सदी के शुरुआत वर्षों में दुनिया के अमूमन सभी प्रतिष्ठित अर्थवेत्ताओं ने डॉ. अम्बेडकर की अर्थशास्त्र संबंधी समझ और योगदान को सराहा। बावजूद इसके वर्ष 1923 में भारत लौटने के बाद उन्होंने सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को बदलने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया। सामाजिक गैर-बराबरी, छुआ-छूत, अस्पृश्यता जैसी समस्याओं से एक बड़े तबके को उबारने के लिए उनके शांतिपूर्ण और तर्क आधारित संघर्ष ने नए भारत के निर्माण का पथ प्रदर्शित किया। जाति-धर्म संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवीय गरिमा को महत्व देने वाले डॉ. अम्बेडकर का कर्म क्षेत्र उदारवादी दिखाई पड़ता है। लोकतान्त्रिक मूल्यों पर गहरी आस्था रखने वाले संविधान शिल्पी का मानना था कि 'संविधान श्रेष्ठ है क्योंकि यह स्वतन्त्रता में अभिवृद्धि करता है[iv]'। 14 अप्रैल, 2018 को भारत के राष्ट्रपति ने अपने उद्बोधन में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा सामाजिक समरसता और न्याय कायम

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रखने के लिए शांति, सौहार्द्र और भाईचारे के आह्वान का अनुसरण करने को कहा। महाड़ सत्याग्रह, चावदार आंदोलन या फिर कालाराम मंदिर प्रवेश सत्याग्रह डॉ. अम्बेडकर द्वारा मानवीय गरिमा की रक्षा और मानवता के बीच सौहार्द्र स्थापित करने की उदरवादी दृष्टि का परिचायक रहा है।

स्वाधीन भारत में सामाजिक लोकतन्त्र के विस्तार और मानवाधिकार कानूनों के प्रवर्तन के साथ एक बड़ा सकारात्मक बदलाव विश्वसनीय प्रगतिशील सामाजिक आंदोलनों के रूप में रहा है। इसने व्यावसायिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने के साथ छुआ-छूत और गैर-बराबरी को कम करने के साथ-साथ महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता एवं आर्थिक-राजनीतिक भागीदारी को भी बढ़ाने का कार्य किया है। डॉ. अम्बेडकर के चिंतन में अनुसूचित जातियों, पिछड़ों सहित महिलाओं को मुख्यधारा में जोड़कर आगे ले जाने का उद्देश्य प्रमुखता से शामिल रहा है। निःसन्देह हम कह सकते हैं कि विश्व बंधुत्व का चिंतन अथवा प्रयास समावेशी सरोकारों के बिना संभव नहीं है। यह एक सर्वसमावेशी विचार है। डॉ. अम्बेडकर जिसे बखूबी समझते थे।

मानवता के प्रति उदारता

डॉ. अम्बेडकर के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उनका जीवन व्यावहारिक धरातल पर जिन चुनौतियों से होकर महान बना, उनकी उदारवादी दृष्टि को ही दर्शाता है। भारत के संविधान में यह सारे तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं। डॉ. अम्बेडकर ने स्वयं पर हुए भेदभाव को अवसर मिलने पर दूसरों के साथ नहीं अपनाया। यही उनकी विश्व बंधुत्व की वैचारिकी को बल प्रदान करता है। जातिगत भेदभाव और हिंसा के निरंतर अपमान का अनुभव करते हुए जो इसकी वास्तविकता या महत्व से इनकार करते हैं या एक अमानवीय आक्रोश पर सार्वजनिक बहस को शांत करना चाहते हैं। बाबासाहब अंबेडकर ने अपना पूरा जीवन सामाजिक समरसता के मूल्य निर्माण पर समर्पित कर दिया। आज दुनिया उन्हें एक महान विचारक, नेता, लोकतंत्रवादी और बुद्ध की शिक्षाओं के मार्गदर्शक के रूप में मानती है और उनके चिंतन और जीवन दर्शन के प्रति सजग होकर विश्वशांति एवं बंधुत्व की संकल्पना को साकार करने की ओर उन्मुख है। भारत के महान नेताओं में, निश्चित रूप से डॉ. अंबेडकर सबसे ऊपर हैं जो इतिहास को आकार देना जारी रखते हैं, जिनकी प्रासंगिकता वर्तमान आर्थिक और सामाजिक क्षण में ताजा हो जाती है, और जिनका प्रभाव भारत से परे भी है। उनकी वैचारिक उपस्थिति भेदभाव के अधीन लोगों को ऊर्जा प्रदान करती है।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। अनुसूचित जातियों, कमजोर-पिछड़े एवं महिलाओं के सच्चे मुक्तिदाता, एक महान राष्ट्रीय नेता और देशभक्त, एक महान लेखक, महान शिक्षाविद्, महान राजनीतिक दार्शनिक, महान धार्मिक मार्गदर्शक से कहीं बढ़कर एक महान मानवतावादी मनीषी डॉ. अम्बेडकर ने जो दिशा प्रदान की है वह वर्तमान ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए भी उतनी ही समीचीन होगी। डॉ. बाबासाहेब

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अम्बेडकर के व्यक्तित्व के इन सभी पहलुओं में मजबूत मानवतावादी आधार थे। भारत सरकार ने डॉ. अम्बेडकर की जन्म भूमि से लेकर कर्मभूमि से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों को पंचतीर्थों के रूप में स्थापित किया है, जो कहीं न कहीं डॉ. अम्बेडकर द्वारा विश्व शांति , समरसता और विश्व बंधुत्व को लेकर उनकी दृष्टि के प्रति राष्ट्रीय सम्मान का विषय है। उनके उदार मानवतावादी दर्शन और चिंतन को आगे ले जाने के लिए यह एक प्रभावी एवं आवश्यक प्रयास है।

डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में 20 मार्च 1927 को, बढ़ी संख्या में सत्याग्रही सार्वजनिक स्थान से पानी पीने के अपने मानव अधिकार का दावा करने के लिए चावदार तालाब तक मार्च में सहभागिता की। सामूहिक मार्च पर सवर्णों द्वारा हमला किया गया कई सत्याग्रही उनके द्वारा घायल हो गए। यहाँ बताना उचित होगा कि इन सत्याग्रहियों में कई ऐसे पूर्व सैनिक भी थे जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अपनी बहादुरी दिखाई थी। वे मुंहतोड़ जवाब दे सकते थे। लेकिन डॉ. अम्बेडकर ने सभी सत्याग्राहियों से अपील की थी कि वे हिंसा में शामिल नहीं होंगे। ऐसी स्थिति में अहिंसा पर इतना दृढ़ विश्वास वही व्यक्ति कर सकता है जो अपनी अंतरात्मा में मानवतावादी हो।

निष्कर्ष:

डॉ. अम्बेडकर के पिता सूबेदार रामजी कबीरपंथ के जाने-माने अनुयायी थे। कबीर दोहे तर्कवाद के सच्चे रत्न हैं। उनका जीवन मानवतावादी मान्यताओं का सबसे साहसी अभिव्यक्ति है। डॉ. अम्बेडकर के मन में बचपन से कबीर के दर्शन की गहराइयों की समझ विकसित हुई। डॉ. अम्बेडकर अपनी उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका रहने के दौरान पश्चिमी उदारवादी विचार और मानवतावादी दर्शन का अध्ययन किया। जिसे प्रो. जॉन डेवी, जो उनके शिक्षक भी थे, जॉन स्टुअर्ट मिल, एडमंड बर्क और प्रो. हेरोल्ड लास्की जैसे महान विचारकों द्वारा प्रतिपादित किया गया था। डॉ. अम्बेडकर के मस्तिष्क पर इन मूल विचारकों का प्रभाव पड़ा। जो उनके लेखों और भाषणों में बार-बार आने वाले उद्धरणों से स्पष्ट होता है। वह जिस सामाजिक परिवेश में रहते थे, और जिस उदार अकादमिक विचार का उन्होंने अध्ययन किया, उसके बीच का अंतर उन्हें एक उत्साही मानवतावादी बनाने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था। मानवतावाद का विचार डॉ. अम्बेडकर को एक ऐसे वैश्विक नायक के रूप में स्थापित करता है, जिसके दिखाये गए मार्ग पर चलकर हम विश्व बंधुत्व की अवधारणा को साकार कर सकते हैं।

The Asian Thinker

संदर्भ:

- Jatava D.R. (2001), Political Philosophy of Dr. Ambedkar, National Publishing House, Jaipur and New Delhi
- Bernard S. Cayme (1988), Lexicon Encyclopedia, Lexicon Publication Inc. New York, N.Y.
- Keer, Dhananjay.(1954). *Dr Babasaheb Ambedkar Life & Mission*. Mumbai. Popular Prakashan
- Barnwal ,Bijay K. ;*Dr. B. R.Ambedkar'sQuest for Gender Equality It's Relevance in Contemporary Feminist Discourse;* (Online International Interdisciplinary Research Journal, {Bi-Monthly}, ISSN2249-9598, Volume-IV, Issue-II, Mar-Apr 2014)
- Society needs harmony, not strife: Prez says at Ambedkar's birthplace

  (https://www.business-standard.com/article/pti-stories/society-needs-harmony-not- strife-prez-says-at-ambedkar-s-birthplace-118041400696_1.html Access 03/03/2023)

- Dr. Bhimrao Ambedkar as a Humanist https://www.ambedkaritetoday.com/2020/11/ambedkar-as-a-humanist.htmlAccess 31/03/2023

---

i http://www.samaylive.com/article-analysis-in-hindi/182084/.html (24/11/14, 11:10 am)

ii अंबेडकर का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण (https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/democratic-vision-of-ambedkar access 02/04/23)

iii अंबेडकर का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण (https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/democratic-vision-of-ambedkar access 02/04/23)

iv(https://www.drishtiias.com/hindi/paper4/indian-political-thinker-br-ambedkar access 03/04/23)

The Asian Thinker